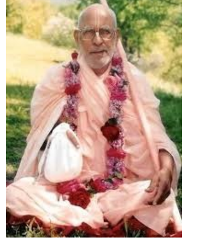



॥श्रीश्री गुरु–गौराङ्गौ जयतः॥
॥श्री राधिकाये नमः॥

श्रीरंगनाथ गौड़ीय मठ गोशाला
हेसरकट्टा, बंगलौर–560 088
मोबाइलः 9021625228



एकादशी के दिन केवल फल एवं जल का सेवन करें। दूसरे दिन सूर्योदय के उपरांत अन्न–प्रसाद सेवन करके पारण कर ले। एकादशी दिनों की सूचिः 11/12/2020, 25/12/2020, 09/01/2021, 24/01/2021, 08/02/2021, 23/02/2021, 09/03/2021, 25/03/2021, 08/04/2021, 23/04/2021, 07/05/2021, 23/05/2021, 06/06/2021, 21/06/2021, 06/07/2021, 20/07/2021, 04/08/2021, 18/08/2021, 03/09/2021, 17/09/2021, 02/10/2021, 16/10/2021, 01/11/2021, 15/11/2021, 30/11/2021, 14/12/2021, 30/12/2021, 13/01/2022, 28/01/2022. कर्नाटक के गरीब लोगों के सहायता के लिए अपने पुराने कपडे हमें दान करें। सभी उम्र के पुरुष, स्त्री, बालक एवं बालिकाओं के पुराने कपडे हम स्वीकार करेंगे। अन्नदान के लिए दाल, चावल, गेहूँ, आटा, रागी, तेल, सैंधा नमक, गुड़, मुंगफल्ली इत्यादि हमें प्रदान करने के लिए हम से संपर्क करें। जो भक्त लोग गोसेवा के लिए घाँस, भुसी का दान करना चाहते, वे हम से अवश्य संपर्क करें।

श्रीश्रीचाटुपुष्पाञ्जलि

जो स्वामिनी चाटुपूर्ण वचन मात्रसे ही अपने सामने प्रस्तुत जीवपर कृपा कर देती हैं, उन सर्वश्रेष्ठ श्रीराधिकाकी मैं स्तुति करता हूँ।

सर्वप्रथम श्रीरूप गोस्वामी श्रीराधारानीको चाटु वचनोंसे प्रसन्न करते हुए बारह श्लोकोंके कुलक द्वारा उनकी वन्दना करते हैं।

नवगोरोचनागौरी प्रवरेन्द्रीवराम्बराम्। मणिस्तवकविद्योतिवेणीव्यालाङ्गणाफणाम्॥१॥

भावानुवाद—हे वृन्दावनेश्वरी! मैं आपकी वन्दना करता हूँ। आप अभिनव गोरोचनकी भाँति गौराङ्गी हैं, सुन्दर नीलकमलकी भाँति आपके नीले वस्त्र हैं, आपकी लम्बी वेणीके ऊपरी भागमें मणि–रत्नोंसे खचित कवरी–बन्ध, फणवाली काली नागिनके समान प्रतीत होती है॥१॥

भाष्यानुवाद—हे श्रीवृन्दावनेश्वरी! आपकी मैं वन्दना करता हूँ। इस प्रकार बारह श्लोक पूर्ण होनेपर वाक्यका अन्वय होगा। श्रीराधा कैसी हैं? इस जिज्ञासाके उत्तरमें वर्णन करते हैं कि नवगोराचनासे भी अधिक पीतवर्ण अर्थात् गोरी हैं। तुरन्त ही विकसित होनेसे अत्यन्त रमणीय नीलकमलके समान उनकी साड़ी है। मणि गुच्छसे सुशोभित वेणी किसी सर्पिणीके फनके समान प्रतीत होती है। यहाँ वेणीकी काली सर्पिणीके रूपमें कल्पना की गई है। वेणीका शिरोभाग सर्पिणीके फणके समान माना गया है तथा रत्न गुच्छकी, सर्पिणीके फणके रूपमें कल्पना की गई है।

(एक समय श्रीसनातन गोस्वामी और श्रीरूपगोस्वामी राधाकुण्डकी उत्तर–पूर्वी दिशामें श्रीरघुनाथदास गोस्वामीकी भजनकुटीके निकट बैठे हुए श्रीकृष्णकथामें विभोर हो रहे थे। श्रीसनातन गोस्वामीने श्रीरूप गोस्वामीसे पूछा—रूप, आजकल क्या लिख रहे हो? श्रीरूप गोस्वामीने स्वरचित 'चाटुपुष्पाञ्जलिः' नामक स्तोत्र उनके हाथोंमें दे दिया। श्रीसनातन गोस्वामीने उसे पढ़कर कहा– रूप! तुमने 'वेणीव्यालाङ्गणाफणा' पद द्वारा, श्रीराधिकाकी लहराती हुई काली बङ्किम वेणीकी तुलना विषधर काली नागिनसे कर दी है। श्रीराधिका तो सर्वगुणसम्पन्न, परम लावण्यवती, सुकोमल एवं परम मधुर श्रीकृष्णकी प्रिया हैं। उनकी सुन्दर वेणीकी यह उपमा मुझे रुचिकर प्रतीत नहीं हो रही है। श्रीरूप गोस्वामीने मुस्कुराते हुए नम्रतापूर्वक इसमें संशोधन करनेकी प्रार्थना की। श्रीसनातन गोस्वामीको उस समय अन्य कोई उपमा नहीं सूझी। 'पीछे संशोधन करूँगा', ऐसा कहकर वे इसी विषयपर चिन्तन करते हुए वहाँसे विदा हो गये। फिर जब वे कुण्डकी पश्चिम दिशामें पहुँचे, तो उन्होंने कदम्बके वृक्षकी डालियोंपर पड़े एक सुन्दर झूलेपर एक गोपीकिशोरीको झूलते हुए देखा। उसकी सहेलियाँ मल्हार रागका गायन करती हुई उसे झुला रहीं थीं। श्रीसनातन गोस्वामीने उस झूलती हुई गोपीकी वेणीपर, अपने फणोंको लहराती हुई काली नागिनको देखा। वे उसे बचानेके लिये उधरकी और दौड़ते हुए

पुकारने लगे– लाली! लाली! सावधान! तुम्हारी वेणीपर काली नागिन है! किन्तु जब निकट पहुँचे तो देखा कि कुछ भी नहीं है। न किशोरी, न उसकी सखियाँ और न झूला। वे उस दृश्यका स्मरणकर आनन्दसे क्रन्दन करने लगे और उल्टे पाँव श्रीरूप गोस्वामीके पास पहुँचे और बोले– रूप! तुम्हारी उपमा सर्वाङ्गसुन्दर है। श्रीकिशोरीजीने मुझपर अनुग्रह कर अपनी बङ्किम वेणीका स्वयं ही दर्शन कराया है। उसमें संशोधनकी कोई आवश्यकता नहीं है। श्रीसनातन गोस्वामीने इसी झूलनपर श्रीराधाजीका दर्शन पाया था।)

उपमानघटमानप्रहारिमुखमण्डलाम्। नवेन्दुनिन्दिभालोद्यत्कस्तुरीतिल–श्रियम्॥२॥

भावानुवाद—कविगण चन्द्र, अरविन्द आदि जिन उपमान समूहोंसे सौन्दर्यका वर्णन करते हैं, आपका मुखमण्डल उन उपमानोंके अभिमानका खण्डन करनेवाला है। नवोदित चन्द्रमाकी निन्दा करनेवाले आपके ललाटपर कस्तूरी तिलककी शोभा उदित हो रही है। (ऐसी वृन्दावनेश्वरि श्रीराधाको मेरा प्रणाम है॥२॥

भाष्यानुवाद—प्रायः कविजन चन्द्र, कमल इत्यादि उपमान समूहोंसे मुखमण्डलकी तुलना करते हैं, जिससे इन उपमानोंको बड़ा अभिमान हो गया, परन्तु श्रीराधारानीके मुखमण्डलने इन सबके गर्वको खण्डित कर दिया है अर्थात् श्रीराधिका निरूपम मुखवाली हैं। उनका ललाट नवोदित द्वितीय चन्द्रमाको निन्दित करनेवाला है, जिसपर श्रीकृष्णके श्रीचरणकी आकृतिवाला तिलक सुशोभित है।

भ्रूजितानङ्गकोदण्डां लोलनीलालकावलिम्। कज्जलोज्ज्वलताराजच्चकोरीचारुलोचनाम्॥३॥

भावानुवाद—जिन श्रीराधारानीने अपनी भौहोंके द्वारा कामदेवके धनुषको जीत लिया है, जिनकी अलकावली चञ्चल तथा श्यामवर्णकी है तथा जिनके सुन्दर नेत्र काजलकी चमकसे सुशोभित एवं चकोरीके समान सुन्दर हैं (उन श्रीराधारानीको मेरा प्रणाम है)॥३॥

भाष्यानुवाद—श्रीराधारानीकी भौहोंकी शोभाके आगे कामदेवका धनुष भी पराजित हो जाता है। उनकी अलकावली चञ्चल एवं गहरी नीली होनेके कारण श्याम वर्णकी प्रतीत होती है। (जैसे भ्रमरका रङ्ग गहरा नीला होनेके कारण काला दिखता है) उनके चारु नेत्र काजलसे सुशोभित हैं और उनमें प्रियतमके दर्शनकी तृष्णा समायी हुई है। ये दोनों ही गुण चकोरीके नेत्रोंमें भी प्राप्त होते हैं। वे श्यामल वर्ण भी होते हैं तथा चन्द्र दर्शनकी लालसा युक्त भी होते हैं। श्रीराधारानीके नेत्र चकोरीके नेत्रोंसे भी अधिक सुन्दर हैं।

तिलपुष्पाभनासाग्रविराजद्वरमौलिकाम्। अधरोद्धूतबन्धूकां कुन्दालीबन्धुरद्विजाम्॥४॥

भावानुवाद—जिन श्रीराधिकाकी तिल पुष्पके समान नासिकाके अग्रभागमें श्रेष्ठ मुक्ता विराजमान है, जिनके अधरोंने बन्धुलिका (गुड़हल) के पुष्पोंको भी पराभूत कर दिया है तथा दन्तावलीने कुन्द पुष्पोंकी पंक्तिको भी पराजित कर दिया है॥४॥

भाष्यानुवाद—श्रीराधिकाकी नासिकाका अग्रभाग तिल पुष्पके समान श्वेत, रक्ताभ एवं कोमल हैं, जिसमें गोलाईमें सुन्दर प्रकारसे एक लघु माणिक्यके बीच दो मोती जुड़े हुए हैं। इन दो स्थूल मोतियोंके नीचे छोटे–छोटे मोती भी सुशोभित हैं, ऐसा कुछ रसिकजनोंका मत है। (उन श्रीराधारानीको मैं प्रणाम करता हूँ)
"अधरो दूतबन्धुका" का अर्थ स्पष्ट है।

सरत्नस्वर्णराजीवकर्णिकाकृतकर्णिकाम्। कस्तूरीबिन्दुचिबुकां रत्नग्रैवेयकोज्ज्वलाम्॥५॥

भावानुवाद—रत्नयुक्त स्वर्णकमलोंके कोषसे जिनके कर्ण आभूषण बने हुए हैं तथा जिनकी ठोड़ीपर कस्तूरीसे बिन्दु रचना की गयी है, जिनका कण्ठ रत्न आभूषणसे सुशोभित है। (उन श्रीराधिकाको प्रणाम है)॥५॥

भाष्यानुवाद—श्रीराधिकाने कर्णयुगलमें स्वर्ण निर्मित कमलाकार आभूषण धारण किये हुए हैं, जिनकी कर्णिकामें नीलमणि आदि रत्न जुड़े हुए हैं। पुष्पके बीजकोषको कर्णिका कहते हैं, ऐसा हलायुध कोषमें वर्णन किया गया है। कुदृष्टिसे रक्षाके लिये श्रीराधिकाके ओष्ठके नीचे अर्थात् चिबुकपर कस्तूरी बिन्दुको अङ्कित किया गया है। कण्ठकी भूषाके लिये हार धारण कराया गया है। अमरकोषके अनुसार कण्ठमें पहने जानेवाले आभूषणको ग्रैवेयक भी कहते हैं, जो रत्न मण्डित है। (यह अर्थ स्वतः ही प्रकट हो रहा है)

दिव्याङ्गदपरिष्वङ्गलसद्भुजमृणालिकाम्। बलारिरत्नवलयकलालम्बिकलाविकाम्॥६॥

भावानुवाद—कमल दण्डकी भाँति अतिशय सुन्दर आपकी दोनों भुजायें अङ्गद भूषणसे विभूषित हैं तथा आपकी कलाईयाँ (मणिबन्ध) इन्द्रनीलमणि निर्मित, समधुर ध्वनि विशिष्ट कङ्गनों द्वारा सुशोभित है॥६॥

भाष्यानुवाद—आपकी भुजायें मृणालके समान कोमल और लचीली हैं, जो दिव्य बाजूबन्दोंसे और भी

सुशोभित हो रही हैं। इन्द्रने पहले देवासुर संग्राममें नमोचि, बल, पाक आदि दैत्योंको मारा था, इसलिये इन्द्रको बलारि भी कहा जाता है। इन्द्रका रत्न इन्द्रमणि (नीलम) है। श्रीराधिका श्रीश्यामसुन्दरकी अङ्गकान्तिकी सदृष्यताके कारण जब इन्द्रनीलमणिके कङ्गन धारण करती हैं, तो उनसे अस्फुट मधुर (कल) ध्वनि प्रकट होती है। ऐसी उनकी कलाईयाँ हैं। हैम कोषके अनुसार कोहिनीके नीचेके भागको प्रकोष्ठ या कलाविका (कलाई) कहा जाता है, जिनसे कङ्गनोंकी ध्वनि आ रही है। हलायुधके पणिमूलका नाम ही मणिबन्ध है।

रत्नाङ्गुरीयकोल्लासिवराङ्गुलिकराम्बुजाम्। मनोहरमहाहारविहारिकुचकुट्मलाम्॥७॥

भावानुवाद—रत्नजटित अगूँठियोंसे युक्त अङ्गुलियोंसे जिनके हस्तकमल सुशोभित हैं और जिनकी वक्षेज रूपी कमल कलाईयाँ मनोहर महाहारकी विहार स्थली है। (उन श्रीराधिकाको प्रणाम है)॥७॥

भाष्यानुवाद—श्रीराधिकाके श्रीहस्त कमलके समान हैं, जिनकी श्रेष्ठ अंगुलियोंमें रत्नजटित अँगूठियाँ सुशोभित हैं। (इससे यह दृश्य उपस्थित होता है, मानो कमलकी पंखुडियोंपर ओसकी बूँदरूपी रत्न जड़े हों।) हलायुध कोषके अनुसार अंगुलीके आभूषणको अंगुलीयक तथा भूमिका कहा जाता है। यहाँ परिणाम अलंकारका प्रयोग किया गया है। यदि विषयके साथ क्रियाके अर्थका आरोप हो तो परिणाम अलंकार होता है। यहाँ कमल आरोप्य है, जिसका विषय करके ऊपर आरोपण किया गया है। हाथकी अंगुलियोंका अँगूठियोंसे युक्त होना कमलके खिलनेकी क्रियाकी स्फूर्ति कराता है। हिलते हुए महाहार उनके कुचपर विहार कर रहे हैं।

रोमालिभुजगीमूर्धरत्नाभतरलाञ्चिताम्। वलित्रयीलताबद्धक्षीणभङ्गुरमध्यमाम्॥८॥

भावानुवाद—नाभिसे ऊपर उठनेवाली रोमावली सर्पिणीके समान है, जिसके ऊपर हारके पदककी शोभा ऐसी प्रकट हो रही है, जैसे सर्पके सिरके ऊपर मणि हो। श्रीराधिकाकी कृश एवं लचीली कटि त्रिवली रूपी लतासे बँधी हुई है॥८॥

भाष्यानुवाद—नाभिसे उठकर ऊपरकी ओर जानेवाली रोमावली जैसे सर्पिणीके समान है। सर्पिणीके सिरपर रत्न होता है। इधर उनके हारके मध्यमें विराजमान स्यमन्तक मणि उस रोमावलीको छू रही है, जो ऐसी प्रतीत होती है, जैसे वही सर्पिणीके सिरकी मणि हो। अमरकोषके अनुसार हारके मध्यके पदकको तरल कहते हैं। श्रीराधिकाकी नाभिसे जो रोमावली उठ रही है, वह मानो एक लता है, जिससे उनकी कृश कटि बँधी हुई है। इसे देखकर ऐसी कल्पना होती है कि यदि यह कटि इस लतासे बँधी हुई न होती तो कृश होनेके कारण कुचके भारसे मानो टूट ही जाती।

मणिसारसनाधारविस्फारश्रोणिरोधसम्। हेमरम्भामदारम्भस्तम्भनोरुयुगाकृतिम्॥९॥

भावानुवाद—जिन श्रीराधिकाकी मणि जटित करधनीकी आधारभूत विस्तीर्ण श्रोणि (कटितक) सुशोभित है उनकी दोनों जँघाओंकी आकृति सुवर्ण कदलीके अभिमान चेष्टाको संकुचित करने वाली है (उन श्रीराधिकाको प्रणाम है)।

भाष्यानुवाद—श्रीराधिकाका श्रौणिभाग (नाभिसे निचला भाग) सुविस्तीर्ण है जिसपर उन्होंने मणि निर्मित किङ्किणी (करधनी) धारण की हुई है। हलायुध कोषके अनुसार कटिसूत्रके ही सारसान, किङ्किणी, क्षुद्रघण्टिका, ये नाम हैं। सुवर्णकी कदली (केलेके खम्बे) को यह अभिमान था कि मैं गोल, ऊपर मोटा तथा नीचे क्रमशः कृश आकृतिका हूँ। उसके इस अभिमानको जिनके जंघायुगलके रूपने संकुचित कर दिया है, ऐसी श्रीराधिकाको प्रणाम है।

जानुद्युतिजितक्षुल्लपीतरत्नसमुद्रकाम्। शरन्नीरजनीराज्यमञ्जीरविरणत्पदाम्॥१०॥

भावानुवाद— अपने सुन्दर दोनों घुटनोंकी शोभा, पीतवर्णके छोटे रत्नोंसे निर्मित समुद्गक (ढ़क्कनदार पिटारी) की शोभाका तिरस्कार करती है और सुन्दर और रुन–झुन बजते हुए नूपुरोंसे युक्त आपके श्रीचरणयुगल शरत् कालके प्रफुल्लित लाल–लाल पद्म–पुष्पों द्वारा नीराजित हो रहे हैं॥१०॥

भाष्यानुवाद—श्रीराधिकाके घुटनोंकी कान्ति ऐसी है जिसकी तुलनामें छोटे पुखराजके सम्पुटकी शोभाभी पराजित हो जाती है। हेम कोशके अनुसार छोटेके अर्थमें स्तोक, तुच्छ एवं अल्प शब्दोंका प्रयोग होता है। उनके चरणोंके ऊपर शरदकालमें उत्पन्न होने वाले कमलोंको न्यौछावर किया जा सकता है। जैसे कमल वनमें हँस कलरव करते रहते हैं, उसी प्रकार कमलसे भी अधिक सुन्दर चरणोंमें नूपुर झनकार कर रहे हैं। (ऐसी श्रीराधिकाको प्रणाम है।)

राकेन्दुकोटिसौन्दर्यजैत्रपादनखद्युतिम्। अष्टाभिः सात्त्विकैर्भावैराकुलीकृतविग्रहाम्॥११॥

भावानुवाद—कोटि–कोटि पूर्ण चन्द्रोंके सौन्दर्यको जिनके चरण नखकी द्युति जीत लेने वाली है, अष्ट सात्विक भावोंसे जिनका श्रीविग्रह आकुल हो रही है (उन्हें प्रणाम है)॥११॥

भाष्यानुवाद—यदि एक कालमें ही करोड़ों पूर्णिमाके चन्द्रमा उदित हों तो उनकी जो शोभा हो सकती है, श्रीराधिकाके चरण नखकी कान्ति उन सभीको जीत लेने वाली है। श्रीराधिका ही एकमात्र ऐसी नायिका मुकुटमणि हैं जिनमें स्वेद, कम्प, रोमाञ्च, वैवर्ण्य, स्वरभङ्ग, स्तम्भ (जड़ता), अश्रु एवं प्रलय – ये आठों भाव एक ही कालमें सम्भव हैं। श्रीमन् महाप्रभुको छोड़कर अन्यत्र ये आठों भाव एक साथ नहीं दिख सकते।

मुकुन्दाङ्गकृपापाङ्गामनङ्गोर्मितरङ्गिताम्। त्वामारब्धश्रियानन्दां वन्दे वृन्दावनेश्वरि॥१२॥

भावानुवाद—श्रीमुकुन्दके अङ्गोंपर जो कटाक्षपात करती हैं एवं जब श्रीमुकुन्दका दर्शन करती हैं, तो उनके अङ्गोंमें कामदेवकी उर्मियाँ (छोटी लहरें) तरङ्ग बन जाती हैं, जो अपनी शोभासे आनन्दको उत्पन्न करनेवाली हैं, ऐसी श्रीवृन्दावनेश्वरीकी मैं वन्दना करता हूँ॥१२॥

भाष्यानुवाद—जो आनन्द प्रदान करें उनकी ही नाम मुकुन्द है। उनके अङ्गोंपर श्रीराधिका उत्कण्ठा, लज्जा एवं गर्वपूर्वक कटाक्षपात करती हैं। श्रीमुकुन्दके किसी एक अङ्गके भी दर्शनमात्रसे जिनके हृदयमें कामदेवकी उर्मियाँ तरङ्गके रूपमें परिणत हो जाती हैं, ऐसी वृन्दावनेश्वरी श्रीराधिकाकी मैं वन्दना करता हूँ।

अयि प्रोद्यन्महाभावमाधुरीविह्वलान्तरे। अशेषनायिकावस्थाप्राकट्याद्भुतचेष्टिते॥१३॥

भावानुवाद—हे प्रस्फुटित महाभावकी माधुरीसे विवश हृदयवाली, हे समस्त नायिकाओंकी आवस्थोंको प्राकाट्य करनेसे अद्भुत चेष्टावाली श्रीराधे आपको प्रणाम है॥२३॥

भाष्यानुवाद—अयि! सम्बोधन का अभिप्राय विनय और प्रश्नसे होता है अर्थात् आप मुझपर कृपा करें, ऐसा कब होगा? हलायुध कोषके अनुसार महाभावकी प्रस्फुटित माधुरीसे जिन श्रीराधिकाका चित्त विवश हो गया है, ऐसी हे स्वामिनी! आप मुझपर कब कृपा करेंगी? नायिकाओंके स्वरूप भेदसे मुग्धा, मध्या, प्रगल्भां आदि तथा अवस्था भेद अभिसारिका, उत्कण्ठिता, खण्डिता आदि प्रमुख आठ दशाओंसे प्रकाट्यसे जिनकी चेष्टायें अद्भुत चमत्कार प्रकट करती हैं, ऐसी हे श्रीराधिके! आप मुझपर कृपा करें। भाव यह है कि जैसे स्वयं श्रीकृष्णमें सभी नायकोंके गुण यथाअवसर उदित होते हैं, उसी प्रकार स्वयं लक्ष्मी श्रीराधिकामें सभी नायिकाओंके गुण भी प्रकट होते हैं।

सर्वमाधुर्यविञ्जोलीनिर्माञ्छितपदाम्बुजे। इन्दिरामृग्यसौन्दर्यस्फुरदङ्घ्रिनखाञ्चले॥१४॥

भावानुवाद—सम्पूर्ण माधुर्यकी चारुताके समुद्रको मथनेपर जो सार प्रकट हुआ, वह आपके श्रीचरणकमलोंमें विराजमान है अथवा (निर्मन्छित पाठ ग्रहण करनेपर अर्थ होगा) सम्पूर्ण माधुर्यकी चारुता जिनके श्रीचरणकमलोंपर न्यौछावर कर दी जाती है, (ऐसी हे श्रीराधिके! आप कब मुझपर कृपा करेंगी?) लक्ष्मी आदि द्वारा प्रार्थनीय सौन्दर्य राशि आपके प्रस्फुटित नखाग्रमें ही विराजमान है। (ऐसी हे श्रीराधिके! आप कब मुझपर कृपा करेंगी?!)॥१४॥

भाष्यानुवाद—सभी नायिकाओंमें विभिन्न अवस्थाओंकी जो चारुता राशि प्रकट होती है, उसको मथनेपर उत्पन्न होनेवाला सार पदार्थ ही आपके श्रीचरणकमल हैं अथवा उस चारुता राशिको आपके चरणाम्बुजपर न्यौछावर किया जा सकता है।

इन्दिरा आदि जिस सौन्दर्यकी अभिलाषा करती हैं, वह सौन्दर्य तो आपके चरणोंके देदीप्यमान नखाञ्चलमें ही विराजमान है। तात्पर्य यह है कि श्रीराधिका ही महालक्ष्मी हैं। पूर्वोक्त श्रुतियोंके आधारपर उनकी ही विलासांश कलारूप अन्य लक्ष्मियाँ हैं, जो उनके नखाञ्चलके सौन्दर्यकी अभिलाषा करती हैं, जैसे श्रीवासुदेवके सौन्दर्यकी श्रीसङ्कर्षण, श्रीश्वेतद्वीपपतिके सौन्दर्यकी बदरीपति नर–नारायण एवं श्रीकृष्णके सौन्दर्यकी उनके पुत्र बल, प्रद्युम्न आदि अभिलाषा करते हैं। अन्य विद्वतजन ऐसा कहते हैं कि वैकुण्ठेश्वरी लक्ष्मी श्रीराधिकाके सौन्दर्यको इसलिये प्राप्त करना चाहते हैं, जिससे श्रीकृष्ण उनको अङ्गिकार कर लें, परन्तु वह सौन्दर्य उन्हें प्राप्त नहीं होता। अतएव श्रीराधिकाके सौन्दर्यके कारण ही रसिक श्रीकृष्ण द्वारा लक्ष्मीको स्वीकार नहीं किया जा सकता। श्रीमद्भागवत्के अनुसार जिस चरणरजकी प्राप्तिकी अभिलाषा धारणकर व्रतचर्या स्वीकार करते हुए कामनाओंको त्यागकर सुन्दरी श्रीलक्ष्मीने भी दीर्घकाल तक तपस्या की। (श्रीमद्भागवत् १०–१६–३६)

गोकुलेन्दुमुखीवृन्दसीमन्तोत्तंसमञ्जरि। ललितादिसखीयूथजीवातुस्मितकोरके॥१५॥

भावानुवाद—गोकुलकी चन्द्रमुखी सुन्दरीगणोंके मस्तककी मणिके ऊपर विराजमान मञ्जरी (चन्द्रिका) रूपा हे श्रीराधिके! (आप कृपा करें) आपकी मन्द मुस्कान, रूपकली, ललिता आदि सखियोंके यूथकी प्राणरूप है। (आप मुझपर कब कृपा करेंगी?)॥१५॥

भाष्यानुवाद—सब लीलाओंमें सर्वोत्तम व्रजलीला है। वहाँ गोपियोंका उज्जवल प्रेम श्रेष्ठ रस है। श्रीराधिका इन गोपियोंमें भी सीमन्त मणि (शिरोमणि) की मञ्जरीके समान रूप, गुण और प्रेममें सर्वोत्तम हैं।

उनकी मन्द मुस्कान कुन्दकलीके समान सुन्दर और प्रकाशमान है। ललितादि सखियोंके यूथ इस मुस्कानको दर्शन करके ही जीवित रहते हैं अर्थात् वह श्रीराधिकाके सुखको ही अपना प्राणधन समझती हैं।

चटुलापाङ्गमाधुर्यबिन्दून्मादितमाधवे। तातपादयशःस्तोमकैरवानन्दचन्द्रिके॥१६॥

भावानुवाद—हे श्रीराधिके! आपके चञ्चल कटाक्षके माधुर्यके एक बिन्दुमात्रसे ही माधव उन्मत्त हो जाते हैं। आप उस चन्द्रिकाके समान हैं, जो आपके पितृ चरण श्रीवृषभानु बाबाके यश समूह रूपी कुमुदोंको खिलानेवाली हैं। (ऐसी हे श्रीराधिके! आपको प्रणाम है)॥१६॥

भाष्यानुवाद—श्रीराधिकाके स्वभावतः चञ्चल कटाक्षोंसे माधुर्यकी धारा प्रवाहित होती रहती है। उसकी एक बूँदको भी प्राप्तकर श्यामसुन्दर उन्मत्त हो जाते हैं। जैसे चन्द्रिकाके प्रकाशसे ही कुमुदवन खिलते हैं, उसी प्रकार श्रीराधिकाके गुण और उनका स्वरूप ऐसा है, जिससे वृषभानु बाबाके कीर्ति राशि रूपी कुमुद खिल जाते हैं अथवा आनन्दित हो जाते हैं। (ऐसी श्रीराधिके! आप मुझपर कृपा करें।)

अपारकरुणापूरपूरितान्तर्मनोह्लदे। प्रसीदास्मिन् जने देवि निजदास्यस्पृहाजुषि॥१७॥

भावानुवाद—अपार करुणाकी बाढ़से जिनका मन रूपी सरोवर भरा हुआ है, ऐसी हे देवि! आपके निज दास्यकी अभिलाषा रखनेवाली मुझपर आप कृपा करें।

भाष्यानुवाद—जब बाढ़ आती है तो समस्त तालाब जलसे परिपूर्ण हो जाते हैं। हे महादयावति श्रीराधिके! आपका मन रूपी सरोवर अपार करुणाकी बाढ़के करुणाजलसे परिपूर्ण है। आप इस जनपर अर्थात् मुझपर कृपा करें। मैं आपकी कृपा के उपयुक्त हूँ, यह सङ्केत करते हुए मञ्जरी भावाविष्ट श्रीरूपगोस्वामी कहते हैं कि मैं आपकी निज दासी बननेकी अभिलाषासे युक्त हूँ, अतः आप मुझपर कृपा करें।

कच्चित् त्वं चाटुपटुना तेन गोष्ठेन्द्रसूनुना। प्रार्थ्यमानचपालाङ्गप्रसादा द्रक्ष्यसे मया॥१८॥

भावानुवाद—श्रीकिशोरीजी द्वारा किये गये कृपादानमें कुछ विशेष सेवाओंकी प्रार्थना करते हैं।

अहो! कब वह अवसर होगा, जब मैं आपकी उस शोभाका दर्शन करूँगी, जब चाटुकारिता करनेमें पटु व्रजकुमार वह कृष्ण आसे प्रार्थना कर रहे होंगे कि आप मुझपर चञ्चल कटाक्षपातकी कृपा करें॥१८॥

भाष्यानुवाद—कच्चिद् शब्द प्रश्न भावको प्रकट करता है। हलायुधके अनुसार प्रश्न और कामनाके अर्थमें कच्चिद शब्दका प्रयोग होता है। कभी मञ्जरी आपसे कुछ पूछना चाहती है। यदि श्रीराधिका कहे कि पूछा, तब मञ्जरी कहती है—चाटुकारितामें पटु अर्थात् मीठे वचन रचनेमें निपुण उन व्रजकुमारके द्वारा चञ्चल कृपा कटाक्षपातकी जब आपसे प्रार्थना की जा रही हो, ऐसी आपकी शोभाका मैं कब दर्शन करूँगी? अर्थात् आपका जब मान समाप्त हो गया हो, उस समय आप अकेली ही बैठी होंगी। आपके पास मैं ही केवल एकमात्र सेविकाके रूपमें रहूँ। तभी सखियोंके द्वारा प्रिय वचन रचना (चाटु) में पटु श्रीकृष्णका प्रवेश होता है। आप उन्हें सरल दृष्टिसे देखें। श्रीश्यामसुन्दर आपसे चञ्चल कटाक्ष रूपी कृपाकी प्रार्थना कर रहे हों, आपकी ऐसी शोभाका मैं कब दर्शन करूँगी?

त्वां साधु माधवीपुष्पैर्माधवेन कलाविदा। प्रसाध्यमानां स्विद्यन्तीं बीजयिष्याम्यहं कदा॥१९॥

भावानुवाद—कलाविद माधवके द्वारा माधवी पुष्पोंसे भली-भाँति आपको सजाये जाते समय स्वेदसे युक्त आपपर मैं कब वीजन (पङ्खा) करूँगी॥१९॥

भाष्यानुवाद—मण्डल कलामें मण्डित माधव, माधवी पुष्पोंसे जब आपका शृङ्गारकर रहे हों, उस समय उनके श्रीहस्तका स्पर्श प्राप्तकर आपके श्रीअङ्गमें भावजनित प्रस्वेद उत्पन्न हो जायेगा। उस समय आपपर मैं कब पङ्खा करूँगी? यहाँ माधव शब्दसे श्रीश्यामसुन्दरका अनुकूल नायक होना तथा श्रीराधिकाका स्वाधीनभर्तृका नायिका रूप इङ्गित हो रहा है, क्योंकि माधवका अर्थ ही है माः—लक्ष्मी (श्रीराधिका) धवः पति।

केलिविस्रंसिनो बककेशवृन्दस्य सुन्दरि। संस्काराय कदा देवि जनमेतं निदेक्ष्यसि॥२०॥

भावानुवाद—हे सुन्दरि! वह अवसर कब प्राप्त होगा, जब आप इस जनको (मुझे) रसकेलिमें खुले हुए कुटिल केशसमूहको गूँथनेके लिये आदेश प्रदान करेंगी॥२०॥

भाष्यानुवाद—श्रीश्यामसुन्दरने आपका प्रसाधन पूर्णकर आपके साथ जब केलि विलास किया होगा, तब आपके घुँघराले केश समूह बिखर गये होंगे। उस समय सखियोंके नर्म परिहास आदिसे रक्षाके लिये आप निकट ही सेवामें स्थित मुझ दासीको कब आज्ञा देंगी कि मेरी वेणीको दोबारा गूँथ दे। ऐसा सौभाग्य मुझे कब मिलेगा?

कदा बिम्बोष्ठि ताम्बूलं मया तव मुखाम्बुजे। अर्प्यमाणं व्रजाधीश-सूनुराच्छिद्य भोक्ष्यते॥२१॥

भावानुवाद—हे बिम्बफलके समान ओष्ठवाली! जब मैं आपके मुखकमलमें ताम्बूल अर्पित कर रहीं होऊँगी, तब व्रजकुमार श्रीकृष्ण बीचमें ही उसे छीनकर स्वयं उसका भक्षण कर लेंगे। कब मैं इस लीलाका दर्शन करूँगी?॥२१॥

भाष्यानुवाद—हे राधिके! आपके ओष्ठ तो स्वतः ही बिम्बफलके समान लाल हैं। आपके मुखकमलमें जब मैं ताम्बूल बीड़ा अर्पित कर रही होऊँगी, उस समय श्रीव्रजराज नन्दकुमार मोहन उस ताम्बूलको बलपूर्वक छीनकर स्वयं इसलिये आरोगेंगे कि नैसर्गिक लाल आपके होठोंको पानकी क्या आवश्यकता है? श्रीकृष्ण द्वारा किये गये इस विनोदके दर्शनका सौभाग्य आप मुझे कब प्रदान करेंगी?

व्रजराजकुमारवल्लभाकुलसीमन्तमणि प्रसीद मे।
परिवारगणस्य ते यथा पदवी मे न दवीयसी भवेत्॥२२॥

भावानुवाद—अहो! मेरा इतना सौभाग्य कहाँ है? यदि ऐसा सौभाग्य न हो, तो आप कृप्या इतना तो सम्पादित कर ही दें कि हे व्रजराज श्रीनन्दके कुमार श्रीकृष्णकी सभी प्रेयसियोंमें मुकुटमणि रूप राधिके! आप मुझपर ऐसी कृपा करें, जिससे आपके परिवारगणोंके बीच मेरी स्थिति (पद्वी) दूर न रहे (अर्थात् मैं आपकी निकअ सेवकिओंमें ही गिनी जाऊँ॥२२॥

भाष्यानुवाद—व्रजराजकुमार श्रीश्यामसुन्दरकी जितनी भी प्रेयसी हैं, हे राधिके! आप उन सबकी शिरोभूषण रूपा हैं। मोदिनी कोषके (सीमन्तमणि) के अनुसार मणि शब्दका प्रयोग किरण समूह मोती इत्यादिक रत्नोंके अर्थमें होता है। यह पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग दोनोंमें प्रयुक्त होता है। आप मुझपर इतनी तो कृपा करें कि मेरी स्थिति दुस्तर न हो जाये अर्थात् मैं उनके निकट ही रहूँ।

करुणां मुहुरर्थये परं तव वृन्दावनचक्रवर्तिनि।
अपि केशरिपोर्यथा भवेत् स चटुप्रार्थनभाजनं जनः॥२३॥

भावानुवाद—हे वृन्दावनकी चक्रवतिनी! मैं तो आपकी करुणाकी ही केवल अभिलाषा रखती हूँ, जिससे आपकी कृपाके बलपर मैं केशीके शत्रु श्रीश्यामसुन्दरकी भी अनुनय-विनय भरी प्रार्थनाकी पात्र बन जाऊँ॥ २३॥

भाष्यानुवाद—श्रीराधिका वृन्दावन राज्यकी पट्टाभिषिक्त स्वामिनी हैं। आपकी करुणाकी ही मैं केवल प्रार्थना करती हूँ, जिससे मुझे ऐसा गौरव प्राप्त हो कि मानका त्यागकर केशी दैत्यका वध करनेवाले श्रीकृष्ण भी प्रियवचन सहित मुझसे प्रार्थना करने लग जायें। (आप मुझे किशोरीजीके दर्शन दें) कभी श्यामसुन्दरको जब निकुञ्जमें प्रवेश प्राप्त न हो, तब वे सखी और किङ्करियोंके मध्य मुझसे प्रार्थना करने लगें कि हे दयावती सुन्दरि! मेरी वेदनाको तुम वृषभानुनन्दिनी श्रीराधिकाके पास पहुँचा दो। आपकी कृपासे, मैं ऐसी सौभाग्य पात्र कब बनूँगी? इन दोनों पद्यों (२२-२३) में सुन्दरी नामक अर्धसम छन्द है, जिसका लक्ष्य "अयुजोर्यदि सौ जगौ युजोः सभ्रालगौ ययि सुन्दरी मता" होता है अर्थात् जहाँ विषम पदोंमें (पहले और तीसरे पदमें) दो सगण, एक जगण तथा एक गुरु तथा द्वितीय और चतुर्थ चरणमें सगण, यगण, रगण तथा लघु एवं गुरु होते हैं, उसे 'सुन्दरी छन्द' कहा जाता है।

इमं वृन्दावनेश्वर्या जनो यः पठति स्तवम्।
चाटुपुष्पाञ्जलिं नाम स स्यादस्याः कृपास्पदम्॥२४॥

वृन्दावनेश्वरीके इस 'चाटुपुष्पाञ्जलि' नामक स्तवको जो पढ़ेगा, वह उनकी कृपाका पात्र बनेगा।

इति श्रीरूपगोस्वामिविरचितस्तवमालायां श्रीचाटुपुष्पाञ्जलिः सम्पूर्णः।